एपिसोड–15

शिकार और झूम खेती का जैवविविधता पर प्रभाव

आलेख और अनुसंधान :डॉ. अनुराग शर्मा

त्रिलोक : चलो। चलो। मेधा–प्रयास अब बहुत शहतूत खा लिये चलो अब घर चलो।

कल्लू : हां भई दादा जी, दादी जी भी इन्तजार कर रहे होंगे और प्रकाश भी तो आने वाला है तुम्हें लेने।

मेधा : हां, हां, चाचा पता है, बस चले रहे हैं।

प्रयास : चाचा, पिता जी तो पहुंच भी गए होंगे !(दृश्य परिवर्तन – दादा जी का घर)

दादा जी : भई, मुखिया जी इतने ध्यान से अखबार में क्या पढ़ रहे हो? क्या सरकार ने समर्थन मूल्य बढ़ा दिया है। (हंसते हैं)

मुखिया : अरे नहीं, दादा जी, आज कुछ बाघ और तेंदुए की खालें आदि बरामद हुई हमारे गांव के जंगलों में, बस वही खबर पढ़ रहा था।

दीनू : हां, दादा जी, कल चौपाल पर काफी भीड़ थी, अपने एस.पी.साहब भी आए थे। अरे आपके यहां ही तो चाय पी कर गए थे।

मुखिया : क्या कह रहे थे एस.पी.साहब।

दादा जी : एस.पी.साहब और वार्डन साहब दोनों ही आये थे। असल में खाल वगैरह तो पकड़ में आ गई पर शिकारी या फिर कहें तो चोर का नहीं पता लगा। आज फिर से इसी इलाके के दौरे पर हैं।

दीनू : अरे। आओ, आओ, प्रकाश भईया, नमस्ते भाभी, मां जी, मांजी ! प्रकाश भईया और भाभी आए हैं।

प्रकाश, शोभा : नमस्ते, पिताजी, नमस्ते मुखिया जी .....

सभी : नमस्ते,नमस्ते, जीती रहो बेटी।(दादी जी का प्रवेश)

दादी जी : जीती रहो बहू। प्रकाश बेटा देर कर दी।

प्रकाश : अरे मां सब जगह पुलिस चैकिंग कर रही है,वो जानवरों की खाल वाला मामला है, शायद।

शोभा : मां यह मेधा–प्रयास कहां हैं।

दादी जी : सुबह से त्रिलोक कल्लू के साथ है लो आ गये।(मेधा–प्रयास चिल्लाते हुए)

मेधा–प्रयास : मां, पिता जी s s s !(मां–पिता का Reaction)

त्रिलोक : कैसे हो, प्रकाश, नमस्ते भाभी।

प्रकाश : सब ठीक है, तुम सुनाओ।

त्रिलोक : दादा जी, पुलिस वाले और वन विभाग वाले सब लोगों से पूछताछ करते घूम रहे हैं।

कल्लू : हां दादा जी, हमें अभी एस.पी.साहब मिले थे, वो शेर की खाल का चक्कर है, काफी परेशान लग रहे थे।(जीप रुकने की आवाज)

दीनू : दादा जी, एस,पी.साहब और बार्डन साहब आये हैं।

दादा जी : आओ,आओ, एस.पी. साहब !

एस.पी. : नमस्ते दादा जी, नमस्ते मुखिया जी।

मुखिया : नमस्ते–नमस्ते। यह हमारे दादा जी का बेटा प्रकाश है।

एसपी : नमस्ते प्रकाश, मैं एस.पी. मुकेश श्रीधरन हूं और यह हमारे वन विभाग के वार्डन डॉ. कामरान सिद्दकी हैं।

प्रकाश : नमस्ते, आइए बैठिये।

दादा जी : काफी भाग दौड़ में लगे हो मुकेश बेटा कुछ हाथ लगा।

एसपी : कुछ खास नहीं दादा जी। पर डॉ. कामरान को उम्मीद है आज शाम तक वह इस चोर शिकारी का पता जरूर लगा लेंगे।

डॉ. कामरन : हां दादा जी, कुछ जानकारियां हमारे फोरेस्ट अधिकारियों के हाथ लगी हैं, उम्मीद है कि चोर जल्द पकड़ में आ जायेगा।

त्रिलोक : कितनी खालें बरामद हुई हैं एसपी साहब।

एसपी : 7 बाध की खालें हैं, 150 किलो बाघों आदि की हड्यिां और 65 बाघों के पंजे मिले हैं।

कल्लू : बाप रे ! यह सब क्या काफी महंगी हैं ?

डॉ. कामरन : अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में इन सबकी कीमत करीब 25 से 50 लाख रुपये के बीच में है।

त्रिलोक : हैं !!! इन खाल और हड्डि्यों की इतनी कीमत !

कल्लू : अरे शेर की खाल है,कोई तेरे जैसे भोंदू की थोड़े ना, जो ढोल पर लगाने के काम भी न आए।(सब हंसते हैं)

दीनू : यह खाल, हड्डि्यां,नाखूनों का लोग करते क्या हैं ?

मुखिया : हां, और फिर एक–आध शेर मर भी गया तो क्या फर्क पड़ता है ?

कामरान : नहीं नहीं, शेर, भालू, तेंदुआ, हाथी, गेंडा, आदि सब हमारी जैवविविधता का ही तो हिस्सा हैं। एक जानवर का भी शिकार पूरी कड़ी को बिगाड़ देता है।

प्रकाश : हां मुखिया जी। यह बाघ हैं, जंगली जानवर हैं, तो जंगल हैं, और जंगल हैं तो हम हैं।

एसपी : सही कहा प्रकाश तुमने, अब शेर मारे जायेंगे तो हिरण, जंगली भैंस, आदि बढ़ेंगे और हिरण आदि जब संख्या में ज्यादा होंगे तो पूरा जंगल ही चट कर जायेंगे और साथ में खा जायेंगे हमारी वनस्पतियों की जैव विविधता भी।

कामरान : असल में जंगल पूरे मानव अस्तित्व से जुड़े हैं, जंगल के कारण कई प्रदेशों में ज्यादा पानी बरसता है, और इन्हीं पेड़ों की वजह से जमीन में जल स्तर बना रहता है। शेर बाघ आदि की वजह से

आदमी भी जंगल में पेड़ आदि काटने से बचते हैं। यह खत्म हो गये तो जंगल खत्म होते देर नहीं लगेगी।

दादा जी : हां और फिर हम भी कहां रह जायेंगे।

त्रिलोक : पर यह खाल, हड्डी यह सब किस काम के ?

एसपी : बाघ की हड्डियों से बाहर के देशों में कई दवाइयां बनाई जाती हैं। इन्हीं दवाइयों के चलते दक्षिण चीन में जहां बाघ हजारों में होते थे आज 20 की संख्या में पहुंच गये हैं। इसलिये अपनी दवाइयों की जरूरत को पूरा करने के लिये अब हमारे बाघों पर उनकी नजर है।

कल्लू : अपनी जैव विविधता तो खत्म कर ही रहे हैं साथ–साथ हमारी भी। यानी हम तो डूबेंगे सनम तुम्हें भी ले डूबेंगे।(सब हंसते हैं)

दादा जी : भारत में इस बहुमूल्य जानवर की क्या स्थिति है ?

कामरान : दादा जी भारत में बाघ की संख्या करीब 3500 के आसपास है और वह भी प्रोजेक्ट टाइगर रिज़र्वस की परियोजना के चलते। सन् 1900 में बंगाल टाईगर की संख्या 40000 के आसपास थी, जो चीनी दवाइयों और बाघ की खाल के शौकीनों के चलते आज 3500 से नीचे पहुंच गई है।

एसपी : एक अनुमान के अनुसार भारत में रोज एक बाघ मारा जाता है यानी अगले 5–10 सालों में यह खूबसूरत और हमारी सभ्यता से जुड़ा प्राणी पूरी तरह खत्म हो जायेगा।

मेधा : लोग हाथियों का शिकार भी तो करते हैं।

प्रकाश : हां बेटा उनके दांतों के लिए।

प्रयास : हां हाथी के दांत की बहुत खूबसूरत चीजें बनती हैं।

दीनू : अरे बेटा किसी को मारकर क्या खाक खूबसूरती रहेगी।

दादा जी : सही कहा दीनू, दांत जितना शानदार हाथी पर लगता है उतना मेज पर थोड़े न लगता है।

मेधा : हमारे देश में कितने हाथी बचे हैं ?

कामरन : पहले तो बहुत थे अब केवल 25000 ही बचे हैं जिनमें से सिर्फ 1000 नर हाथी हैं।

एसपी : हां, क्योंकि शिकार भी इन नर हाथियों का किया जाता है। करीब हर साल भारत में 100 नर हाथियों का शिकार किया जाता है।

त्रिलोक : इस हिसाब से एसपी साहब फिर तो 10 साल में ये हाथी खत्म हो जायेंगे।

कामरान : हां त्रिलोक जी अगर यही हालात रहे तो ऐसा ही होगा। हमें अपनी जैवविविधता को बचाने के लिए प्रयत्न करने ही होंगे।

प्रकाश : गैंडे का शिकार भी तो उसके सींग से बनने वाली दवाइयों के लिये किया जाता है।

एसपी : अरे साहब, ये ही क्या तेंदुआ, तिब्बती एंटीलोप, कई तरह के सांप, नाग,अजगर, मोर और दूसरे पक्षी,सभी इन शिकारियों के हाथों मरते रहते हैं और हमारी जैवविविधता ऐसे ही लुटती रहती है।

कामरान : तिब्बती एंटीलोप जिसे स्थानीय भाषा में चुरू कहते हैं, उससे शाहतूश की शालें बनाई जाती हैं। यह शाल कश्मीर में ही बनती है। हालांकि इसके शिकार पर पूरी तरह पाबन्दी है पर यह मृग लुप्त होने के कगार पर आ गया है।

त्रिलोक : गैंडे भी थोडे बहुत होंगे ?

कल्लू : अपने भाई–बन्धुओं की बहुत फिक्र है। अरे हमारी भी कर लिया कर,गैंडे–हाथी तो सरकार बचा ही रही है, पर तेरे रहते हमारा बचे रहना मुश्किल है।(सब हंसते हैं)

दादा जी : अरे गम्भीर बातों को मजाक में नहीं उठाते। (थोड़ा रुककर) बेटा यह जानवरों का शिकार हमारी जैव विविधता के लिये खतरा तो हैं ही। यह जंगल, पेड़, हमारी मिट्टी को उपजाऊ बनाते हैं, जमीनमें पानी का स्तर बनाए रखते हैं। बारिश कराने में सहायक होते हैं और उपजाऊ मिट्टी के क्षरण को भी रोकते हैं अब अगर जंगली जानवरों का भय नहीं होगा तो लालची आदमी तो पूरा जंगल ही काट लेंगे।

कामरान : ठीक कहा दादा जी, इसी लालच के चलते आज 86 किस्म के स्तनधारी जीव, 70 किस्म के पक्षी, 25 रेंगने वाली नस्लें, 244 पौधों की प्रजातियां, और दूसरे 21 रीढ़हीन जन्तु विलुप्ता के कागार पर आ गये हैं।

प्रकाश : हां, बढ़ती आबादी के कारण मानव अपना घर बनाने के चक्कर में इन पशु–पक्षियों का आशियाना छीन रहा है। सिकुड़ते जंगल और खत्म होते तालाब, नदी आदि हमारी जैव विविधता पर एक बहुत बड़ा संकट है।

कल्लू : मैं एक बार अरूणाचल प्रदेश गया था, वहां पर लोग जंगल काट कर और उसमें आग लगाकर बहुत बड़ा इलाका, पेड़–पौधों से खाली कर उसमें खेती करते हैं, इससे भी तो जैवविविधता खत्म होती है।

कल्लू : अच्छा तो तू अरूणाचल प्रदेश तक घूम आया है। अबे देश का कोई इलाका तो छोड़ दे उन्हें करने दे अपनी खेती खा लेने दे अपना खाना, तू क्यों बुरी नजर डालता है।(सब हंसते हैं)

दादी जी : लो भई चाय, नाश्ता लो, शोभा बेटी त्रिलोक का सही ध्यान रखना।

शोभा : मां जी आप चिन्ता मत करो। त्रिलोक भईया के लिये तो खास पकौड़े हैं।(सब हंसते हैं)

दादा जी : त्रिलोक के लिए खास क्यों,हम क्या इतने बुरे हैं।

दादी जी : अरे, खाने से पहले और खाने के बाद जो इतनी तारीफ करे उसका खास ख्याल तो रखना ही पड़ेगा, ले त्रिलोक बेटा तू और पकौड़े ले।(हंसते हुए)

कल्लू : बस–बस दादी जी, खाने के लिये तो यह किसी की भी तारीफ कर दे, आप इसकी तोंद और मेरी पसलियों का ध्यान रखकर पकौड़े बांटो न कि इसकी तारीफ सुनकर।(सब हंसते हैं)

त्रिलोक : बस बेटा, यही जलन तुझे खा–खाकर पतला कर रही है, अबे जितना मिले उसमें संतुष्ट रहना सीख। लाओ भाभी थोड़े से गर्म पकौड़े और देना।(सब हंसते हैं)

दीनू : लो भईया इस हंसी मजाक में तो त्रिलोक की अरूणाचल प्रदेश वाली बात तो रह ही गई।

कामरान : त्रिलोक असल में झूम खेती की बात कर रहा था।

मुखिया : झूम खेती ? ये झूम खेती क्या है वार्डन साहब ?

कामरान : झूम खेती असल में जंगल की वनस्पतियों आदि को 'काटो–जलाओ और खेती करो' के सिद्धांत पर आधारित है। असल में बहुत ही गरीब समाज के लोगों द्वारा झूम खेती की जाती है और इस पद्धति से वह अपने खाने लायक ही फसल पैदा कर पाते हैं।

एसपी : हां, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम आदि उत्तर पूर्वी प्रदेशों में वहां की जनजातियां आदि यह पद्धति इस्तेमाल करते हैं। पहले जंगल काटते हैं या आग लगाते हैं और फिर उस जगह में खेती करते हैं तथा फसल लेने के बाद फिर दूसरी ओर बढ़ जाते हैं। जहां भी काटते हैं, जलाते हैं, खेती करते हैं और फिर उस भूमि को छोड़कर आगे बढ़ जाते हैं।

प्रकाश : इस पद्धति से भी तो हमारी जैवविविधता को काफी नुकसान होता होगा और फिर कितनी पैदावार पा लेते हैं ये लोग।

कामरान : प्रकाश, पैदावार यह अपने खाने लायक तो कर ही लेते हैं। कितना बड़ा खेत तैयार करना है, यह सब इस पर निर्भर करता है कि समूह कितना बड़ा है, क्योंकि यह लोग सारा काम अपने हाथों से ही करते हैं।

दादा जी : यानी जितना बड़ा समूह उतना बड़ा नुकसान।

एसपी : असल में दादा जी, यह लोग बंजारा किस्म के होते हैं। पहले यह जिस खेत को छोड़ देते थे, उस पर दुबारा 20 से 25 साल में आते थे। तब तक वहां की वनस्पतियां आदि भी पैदा हो जाती थी और मिट्टी के उर्वरक क्षमता भी बढ़ जाती और साथ ही साथ जलस्तर भी सही रहता था।

त्रिलोक : रहता था क्या मतलब एसपी साहब अब नहीं रहता क्या ?

कल्लू : अरे तू उन्हें बताने तो दे, बीच में ही टोक देता है। आप क्या सोच रहे हैं, दादा जी !

दादा जी : कुछ नहीं,कुछ नहीं। बस ये ही सोच रहा था कि मुकेश तुम तो एसपी यानी पुलिस महकमे में हो फिर इन सब विषयों पर इतनी जानकारी कैसे ?

एसपी : (हंसते हुए) अरे दादा जी यह जैवविविधता आदि सब हम ही से तो जुड़ी हैं। हमारा इतना विशाल देश है, तरह–तरह की वनस्पतियां, लोग, रीति–रिवाज हैं मान्यताएं हैं, इन सबके बारे में जानना और पढ़ना अच्छा लगता है, वैसे पुलिस अधिकारी यानी आईपीएस अफसर बनने से पहले मैंने पढ़ाई एग्रीकल्चर यानी कृषि विषय में ही की है।

प्रकाश : अच्छा तो यह राज है आपकी इतनी जानकारी का।

मुखिया : भई खेत से जुड़ा आदमी आज हर क्षेत्र में तरक्की कर रहा है।

कल्लू : हां, जैसे अपना त्रिलोक, खेत से जुड़कर तोंद बढ़ाए जा रहा है,बढ़िया तरक्की है भाई।(सब हंसते हैं)

कामरान : हां, त्रिलोक, तुम हो तो भारी भरकम, पर तुमने जो सवाल किया है कि झूम खेती से सब पहले ठीक था पर अब नहीं, यह बात ठीक है। जैसा एसपी साहब ने बताया पहले लोग पुरानी वाली जगह पर 20 से 25 साल में लौटते थे, जिससे मिट्टी अपनी उपजाऊ शक्ति वापस पा लेती थी। परन्तु अब घटते जंगल और बढ़ती आबादी के चलते यह चक्र 3 से 4 साल का रह गया है, और कई–कई जगह तो 1 साल का।

दीनू : तो इस चक्र के कम होने से क्या बहुत नुकसान होता है ?

दादा जी : क्यों नहीं होगा नुकसान,भई मिट्टी की उर्वरक क्षमता पूरी तरह वापस नहीं आती होगी, कई वनस्पतियां दुबारा पूरी तरह उग नहीं पाती होंगी, या फिर उनके बीज नहीं बन पाते होंगे, और पानी का स्तर भी पहले जैसा नहीं हो पाता होगा, क्यों कामरान साहब।

कामरान : बिल्कुल ठीक कहा आपने दादा जी, और इन सबके साथ–साथ उपजाऊ मिट्टी की परत जिसे यह पेड़–पौधे जकड़े रहते थे वह भी बारिश के पानी, हवा आदि के कारण बह जाती है यानी मिट्टी का क्षरण होता है। साथ ही साथ मिट्टी की रासायनिक बनावट में भी फर्क आ जाता है जिससे वह पौधे जो उसमें पहले खूब फलते–फूलते थे अब पनप ही नहीं पाते।

एसपी : इस तरह हमारी जैवविविधता खत्म होने का खतरा हो जाता और कई पौधों की किस्मों की संख्या तो बहुत तेजी से घट रही है।

प्रकाश : मैंने पिछले दिनों अखबार में त्रिपुरा राज्य में तृष्णा वन्य जीव अभ्यरण के बारे में खबर पढ़ी थी। उसमें लिखा था कि भारत में पाई जाने वाली वानरों की 15 में से 7 प्रजातियां यहीं मिलती हैं, साथ ही साथ पक्षियों की 100 से ज्यादा प्रजातियां हैं और 11 मांसाहारी जीव जिनमें बादली तेंदुआ भी शामिल है, यहीं पाये जाते हैं और इन सभी की संख्या में झूम खेती और शिकार के चलते काफी कमी आ रही है।

कामरान : बिल्कुल ठीक प्रकाश, असल मं बढ़ती मानव आबादी जंगल से ले कर पहाड़ों और पहाड़ों से समुद्री किनारों तक तेजी से फैल रही है।

एसपी : और अपने रहने की खातिर हम इनके प्राकृतिक आवास उजाड़ते जा रहे हैं, अगर इसी तरह हम अपनी जैव विविधता खोते रहे तो हमारा अन्त भी दूर नहीं।(जीप के रूकने की आवाज) (इन्स्पेक्टर का प्रवेश)

एसपी : क्या बात है, इन्सपेक्टर अंशुल ?

अंशुल : सर, जंगल में हमने और खालों तथा बहुमूल्य जड़ी–बुटियों के साथ, मंजीत नामक व्यक्ति को उसके गिरोह के साथ पकड़ लिया है। डॉ. कामरान का शक सही था। वे लोग जंगल में ही छिपे थे, तथा हमारे गश्ती दल को देखकर भागे थे, जिससे कुछ खालें और हड्डियां वहीं छूट गईं थी।

कामरान : वैरी गुड अंशुल। चलिये एसपी साहब बहुत–बहुत मुबारक हो, अच्छा दादा जी अब विदा लेते हैं।

एसपी : आप सबको नमस्ते, चले अंशुल।

सब : बहुत–बहुत बधाई, नमस्कार।(जीप की आवाजें)

दादा जी : चलो ये देशद्रोही पकड़े तो गये।

त्रिलोक : हां, इन्हें तो फांसी दे देनी चाहिए।

कल्लू : अपना जीवन तो हमने जी लिया। अब बच्चों को क्या नरक देकर जायेंगे ?

मुखिया : ठीक कहा कल्लू, हमें इन शिकारियों को हर हाल में सबक सिखाना चाहिए। साथ ही साथ झूम खेती से जुड़े लोगों को आर्थिक मदद देकर पूरे देश से जोड़ना चाहिए।

प्रकाश : बहुत सही कहा मुखिया जी, जब हम जानते हैं कि हमारे प्राकृतिक संसाधन, हमारी जैवविविधता ही मानव जीवन को बचाए रखने का साधन है, तो हमें भी इस जैवविविधता को बचाने के लिए प्रण लेना चाहिए।

दीनू : तभी हम अपने बच्चों को सुरक्षित और खुशहाल जीवन दे पायेंगे।

मेधा : पर पिता जी इसके लिए हमें क्या करना होगा ?

प्रयास : हां, पिता जी, हम इस धरती को सही रूप में बचा पाये इसके लिये हम सबका क्या फर्ज है ?

दादा जी : बेटे इसके लिये सबसे जरूरी है कि हम मानव की सबसे बड़ी बुराई और जैव विविधता पर मंडरा रहे सबसे बड़े खतरे से बचें।

मेधा–प्रयास : (एक साथ) वह क्या दादा जी ?

दादा जी : वह है, 'लालच'। जब तक हम मिल–बांट कर और संयम से रहना नहीं सीखेंगे तब तक हमारी जैवविविधता और हम पर खतरा यूं ही बना रहेगा।

त्रिलोक : सही कहा दादा जी लालच ही हर मुसीबत की जड़ है।

कल्लू : चल फिर इस पकौड़े का लालच छोड़, मुझे दे और तू पानी पी।

त्रिलोक : अबे पकौड़े का लालच छोड़ दिया तो मेरी जैवविविधता नहीं खत्म हो जायेगी।(सब हंसते हैं)

,,,